ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I | ISSUE- VII | DEC. | 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

कवि भूषण की काव्य कला

डॉ.गुलाब राठोड

हिन्दी विभाग,

कर्नाटक विश्वविद्यालय,धारवाड

प्रायः कवि के हृदयस्थ भावों की अभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख साधन भाषा है। भाषा के माध्यम से ही प्रत्येक कवि अपनी भावनाओं को वाणी प्रदान करता है,भाषा के माध्यम से ही वह अपने उद्‌गार प्रकट करता है और भाषा के माध्यम से ही वह अपनी प्रतिभा,कल्पना, अनुभुति एवं आदर्श को अभिव्यक्त करता है।

कवि भुषण रीतिकालीन वीर काव्य के एक ऐसे कवि थे,जिन्होंने अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति देने के लिए ब्रजभाषा को माध्यम बनाया । जो उस समय हिन्दी-काव्य की एक प्रमुख भाषा थी और जिसमें लगभग 150 वर्षों से सुंदर एवं सजीव काव्य का निर्माण हो रहा था । इसे ब्रजभाषा के धनी महात्मा सूरदास ने सजाया था,नंददास ने इसमें लालित्य भरा था,गोस्वामी तुलसीदास ने इसे परिष्कृत किया था,रसखान ने इसमें चुस्ती और माधुर्य की सृष्टि की थी, बिहारी ने इसे समास-शक्ति संपन्न बनाया था ओर मतिराम ने इसमें सरसता एवं सरलताका सुचार किया था, उसी सुललित एवं सुमधूर ब्रजभाषा को कवि भूषण ने अपनी वीर भावना के अनुकूल ओजमयी एवं सशक्त बनशने का प्रयास किया । उनके व्दारा प्रयुक्त भाषा का स्वरूप वैसे तो वही ब्रजभाषा है जो संपूर्ण मध्यकाल के कवियों ने प्रायः प्रयुक्त की है,तथापि उसमें सुयुक्त वर्णो की बहुलता है तथा ट,ठ,ड,ढ,वर्णो से युक्त होने के साथ-साथ उसमें व्दित्व वर्णो की भी प्रधानता है । शिवाजी की सूरत विजय का ओजपूर्ण वर्णन भूषण ने निम्न पंक्तियों में किया है -

दिल्लिय दलन दबाय करि सिव सरजा निरसंक ।

लूटि लियौं सूरति सहर बंक्करि अति डंक ।।

यद्यपि कवि भूषण की भाषा में तत्सम शब्द भी मिले है यथा मकरन्द,माधवी,मृगराज,रसाल,सुमन,उपेन्द्र,व्दिजराज,सिंह,हंस,सृष्टि,चातक,कपोत,कदली आदि तथापि तद्‌भव शब्दों की प्रमुखता है यथा- जुत,सुरेस,प्रान,अरथ,सुबरन आकिद। इसके अतिरिक्त कवि भूषण की भाषा में अरबी-फारसी के प्रचलित शब्दों का अत्यधिक प्रयोग मिलता है तथा-अरब,उजर, सुनति, अमीरन, महलन,साकिहबी,पातसाह,बिध्द,स्याह,यार दरबार ,आसमान,दहसति,दिवाल,जरबि,जमात आदि । इतना ही नहीं कवि भूषण की भाषा पर मराठी का भी प्रभाव दिखाई देता है और कवि भूषण ने महाराष्ट्र में रहने के कारण कितने ही ऐसे शब्दों

का प्रयोग किया है जो मराठी–भाषा में प्रदलित है। जैसे –पैज,माची,मसीत (मराटी–मसीद) ,मौज,दंगली,बेदर,उसलत,हटक्यो (मराठी–हटवणे),जासती (मराठी–जास्ती) आदि रूप मराठी प्रवृत्ति के द्योतक है ।

कवि भूषण ने अलंकारों का प्रयोग मुख्यतः अपने भावों की भंगिमा के लिए किया है । कवि भूषण ने शिवराज–भेषण नामक अलंकार –प्रधान ग्रंथ लिखा है,जिसमें उन्होंने 105 अलंकारों का प्रयोग किया है,किकजनमें से 100 अंर्थालंकार है,और केवल 5 शब्दांलकार है । देखा जाय तो ये 105 अलंकार कवि भूषण की कथन–प्रणालियों के द्योतक है,क्योंकि इन प्रणालियों के माध्यम से ही भूषण ने अपने वीरनायक के शौर्य एवं पराक्रम का स्वतंत्रपूर्वक वर्णन किया है । उन्होंने अपने पूर्व रचित कविता से हीं इन अलंकारों का लक्षण निरूपण करने के उपरांत उदाहरणों का चयन कर लिया । कवि भूषण को उपमा,उत्पेक्षा ,रूपक विशेष प्रिय हैं। "मालोपमा" का सुंदर उदाहरन निम्मानुसार है –

इंद्र जिमि जम्भ पर बाडब सुअमभ पर,

रावन सदम्भ पर रघुकुल राज है ।

पौन वारिवाह पर संभु रतिनाह पर,

ज्यों सहसबाहु पर राम द्विजराज है ।।

कवि भुषण ने "उल्लेख "अलंकार का प्रयाग भी अत्यंत कुशलता के साथ इस तरह किया है –

एक कहैं कलपश्दुम हैं इमि पूरत है सबको चित चोहै ।

एक कहै अवतार मनोज को यों तन में अति सुंदरता है ।।

इसी तरह कवि भूषण ने "दिपक" अलंकार का प्रयोग भी अत्यंत पभावशाली ढंग से इस प्रकार किया है –

कमिनी कन्त सों,जामिनी चन्द सों,दामिनी पावस मेघ घटा सो ।

कीरति दान सों,सूरकित ज्ञान सों,प्रीती बडी सनमान महा सों ।।

"भूषण "भूषन सों तरूनी,नलिनी नवपूषन देव प्रभा सो ।

जाकिहर चारहु ओर जहान लसै हिन्दुवान खुमान सिवासों ।।

ऐसे ही कवि भूषण ने "यमक"के अनुलिव चमत्कार से भरा पद्य इस प्रकार लिखा है –

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,

ऊँचे घोर मन्दिर के अन्दर रहाती है ।।

कन्द मूल भोग करैं कन्द मूल भो करैं,

तीन बेर खाती सो तो तीनि बेर खाती है ।।

भूषन सिथिल अंग,भूषण सिथिल अंग ,

बिजन डुलाती ते वे विजनडुलाती है ।

"भूषन"भनत सिवराज वीर तेरे त्रास ,

नगन जडाती ते वे नगन जडाती हैं ।।

प्रायः कवि भूषन की कविता में लक्षणा शब्द शक्ति का ही प्रयोग दिखाई पडता है । लाक्षणिक पदावली के कारण उनकी कविता की अर्थवत्ता में वृध्दि हूई है । मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी उनमें दिखाई पडता है । यथा –

सौ–सौ चूहे खायके बिलारी बैठी तप को ,

स्याह मुख नौरंग सिपह मुख पियरे,

एते पर करति भरोसो कारे नाग को ,

गई कटि नाक सिगरीई दिल्ली दल की ।

इसी तरह कवि भूषण ने विविध्द छन्दों का प्रयोग करके अपने भावों को कलात्मक रूप दिया है । उनकी अधिकतर कविता मनहरन कविता में लिखी गयी है,परंतु "शिवराज भूषन" में मनहरण कविता के अतिरिक्त दोहा, छप्पय,हरिगीतिका,मालती,सवैया,गीतिका छन्दों का प्रयोग मिलता है । "शिवा –बावनी" में मनहरण कविता और छप्पम छन्दों का प्रयोग किया है,जिनमें से वहा मनहरण कविता का ही प्राधान्य है । "छत्रसाल दशक "मनहरण कविता में यथा–

गरूड को दावा जैसे नाग के समूह पर,

दावा नाग जूह पर सिंह सिरताज को ।

कवि भूषन व्दारा लिखा गया एक "हरिगीतिका"छन्द इस प्रकार है–

मनिमय महल सिवराज के इमि रायगढ में राजहीं ।

लखि जच्छ किन्नर सुर असुर गन्धर्व हौसनि साजहीं ।।

इस प्रकार कवि भूषन ने बडी सफाई के साथ छन्दों का प्रयोग किया है,जिनमें वीर–भावों की अभिव्यक्ति की सामर्थ्य हैं और जो कवि भूषन के कलात्मक एवं नादात्मक सौंदर्य के लिए सर्वथा उपयुक्त है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कवि भूषन एक प्रतिभा यंपन्न कवि थे । उनकी अनुभूति जितनी सशक्त है उनती ही सामर्थ्य उनकी कला में भी है । उन्होंने ब्रजभाषा को विभिन्न भाषाओं के मेल से समृध्द किया किन्तु कही–कही व्याकरण के अंकुश को तोडकर भाषागत स्वतंत्रता की प्रवृति का भी परिचय दिया है । साथ ही उन्होंने अपनी कविता में शिवाजी और छत्रसाल के शौर्य एवं पराक्रम के साथ –साथ तत्कालीन समाज की विषमावस्था का भी अत्यंत भव्यचित्र अंकित किया है और औरंगजेब के अत्याचारों एवं अनाचारों की झाँकी अंकित

करते हुए तत्कालीन धार्मिक एवं राजनीतिक स्थितिकयों का भी बडी सजीवता के साथ चित्रण किया है । उन्होंने अपने अनुभूति को अभिव्यक्ति देने के लिए विभिन्न शैलियों को अपनाया । कही वे वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करते है तो कही तथ्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए विवरणात्मक शैली का सहारा लेते है । उनकी अभिव्यक्ति काव्यमय थी अतः उसमें लाक्षणिक शैली एवं आलंकारिक शैली का प्राधान्य दिखाई पडता है । निश्चय ही भूषण हिन्दी साकिहत्य के एक अद्वितीय कवि माने जा सकते है ।

संदर्भ ग्रंथ :–

1) *काव्य दर्शन – रामदहिन मिश्र*

2) *भूषण – ग्रंथावली*

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com